PB **8045**

Roll No. _____ **Total No. of Pages: 04**

6629

B.A. (Semester-V) Examination - Dec. - 2025
हिन्दी साहित्य
Paper - HIN - 301 - A
आधुनिक हिन्दी कविता

Time Allowed: Three Hours **Maximum Marks: 100**

This question paper contains two sections as under:

Section - A **(खण्ड - अ)** **Max. Marks-20**

इस खण्ड में प्रत्येक इकाई से 02 लघु प्रश्न लेते हुए कुल 10 प्रश्न होंगे। प्रत्येक लघु प्रश्न का उत्तर लगभग 20 शब्दों में हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

6629

Section - B **(खण्ड - ब)** **Max. Marks-80**

इस खण्ड में प्रत्येक इकाई से 02 प्रश्न अथवा व्याख्या लेते हुए कुल 10 प्रश्न अथवा व्याख्याएं होंगी। प्रत्येक इकाई से 01 प्रश्न का चयन करते हुए कुल पांच प्रश्न हल करने हैं। प्रत्येक प्रश्न अथवा व्याख्या का उत्तर लगभग 500 शब्दों में हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड - अ)

1. **सभी प्रश्न करना अनिवार्य हैं।**

i) 'द्वापर' खण्ड काव्य का कथानक कहाँ से लिया गया है?

ii) जयशंकर प्रसाद के किन्हीं दो प्रसिद्ध काव्य-संग्रहों के नाम लिखिए।

iii) हिन्दी साहित्य में ''प्रकृति का सुकुमार'' कवि किसे कहा जाता है?

iv) 'सिन्दूर-तिलकित भाल' का क्या अर्थ है और यह किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

v) ''ब्रह्मराक्षस'' कविता का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

vi) ''आत्महत्या के विरूद्ध'' कविता में किसका वर्णन किया गया है?

vii) महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किस साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन किया?

viii) प्रगतिवादी काव्य के मूल में कौन सा स्वर विद्यमान है?

ix) मनोविश्लेषणवाद से क्या तात्पर्य है?

x) बिम्ब और प्रतीक का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(खण्ड - ब)

इकाई - I

2. **सप्रसंग व्याख्या कीजिए-**

बीती विभावरी जाग री!
अंबर पनघट में डुबो रही -
तारा घट ऊषा नागरी।
खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,

लो यह लतिका भी भर लाई-
मधु मुकुल नवल रस गागरी।
अधरों में राग अमंद पिये,
अलकों में मलयज बंद किये-
तू अब तक सोई है आली।
आँखों में भरे विहाग री!

अथवा

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार,
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा,
'मैं तोड़ती पत्थर'।

इकाई - II

3. **सप्रसंग व्याख्या कीजिए-**

कितनी करूणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग,
गाता प्राणों का तार तार
अनुराग भरा उन्माद राग ;
आँसू लेते वे पद पखार।
हँस उठते पल में आर्द्र नयन
धुल जाता ओठों से विषाद,
छा जाता जीवन में बसन्त
लुट जाता चिर संचित विराग,
आँखें देती सर्वस्व वार।

अथवा

सत्य को लकवा मार गया है
वह लम्बे काठ की तरह
पड़ा रहता है सारा दिन सारी रात
वह फटी-फटी आँखों से
टुकर-टुकर ताकता रहता है सारा दिन, सारी रात
कोई भी सामने से आए-जाए
सत्य की सूनी निगाहों में जरा भी फर्क नहीं पड़ता
पथराई नजरों से वह यों ही देखता रहेगा

सारा-सारा दिन, सारी-सारी रात
सत्य को लकवा मार गया है।
गले से ऊपर वाली मशीनरी पूरी तरह बेकार हो गई है। 6629
सोचना बन्द,
समझना बन्द
याद करना बन्द,
याद रखना बन्द
दिमाग की रगों में जरा भी हरकत नहीं होती
सत्य को लकवा मार गया है।

इकाई - III

4. **सप्रसंग व्याख्या कीजिए-**

ओ मेरे अनबुझे सत्य! कितनी बार.....
और कितनी बार कितने जगमग जहाज़
मुझे खींच कर ले गये हैं कितनी दूर
किन पराये देशों की बेदर्द हवाओं में 6629
जहाँ नंगे अंधेरों को
और भी उघाड़ता रहता है
एक नंगा, तीखा, निर्मम प्रकाश-
जिस में कोई प्रभा-मण्डल नहीं बनते
केवल चौंधियाते हैं तथ्य, तथ्य-तथ्य
सत्य नहीं, अन्तहीन सच्चाइयाँ.....
कितनी बार मुझे
खिन्न, विकल, संत्रस्त-
कितनी बार !

अथवा

आप यकीन करें उस समय
मैं चकतियों की जगह आँखें टाँकता हूँ
और पेशे में पड़े हुए आदमी को
बड़ी मुश्किल से निबाहता हूँ 6629
एक जूता और है जिससे पैर को
'नाँधकर' एक आदमी निकलता है
सैर को
न वह अक्लमन्द है
न वक्त का पाबन्द है
उसकी आँखों में लालच है
हाथों में घड़ी है
उसे कहीं जाना नहीं है
मगर चेहरे पर

बड़ी हड़बड़ी है
वह कोई बनिया है
या बिसाती है
मगर रोब ऐसा कि हिटलर का नाती है

इकाई - IV

5. ''गुप्तजी भारतीय संस्कृति के मुखर गायक हैं'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

नयी कविता की प्रवृत्तियों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

इकाई - V

6. आधुनिक कविताओं में मानववाद एवं मार्क्सवाद के प्रभाव को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

6629

अथवा

साहित्य में 'मिथक' का क्या महत्व है? इसके अर्थ एवं स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

https://pyqielo.com

6629